Airo International Research Journal
Volume XIII, ISSN: 2320-3714
November 2017

UGC Approval Number 63012

नगरीय केन्द्रों के भू–ऐतिहासिक तत्व
निचला गंगा–घाघरा दोआब

डॉ. शम्भू नाथ यादव
प्रधानाचार्य
प्राथमिक विद्यालय
संवादपुर, शिक्षा क्षेत्र
पंदह, बलिया, उत्तर प्रदेश

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में नगरीय केन्द्रों के भू–ऐतिहासिक तत्वों का विवेचन किया गया है। नगरों का मूल विकास एक प्रभावशाली कृषि तन्त्र में अधिक होता है, क्योंकि इससे जहाँ एक तरफ जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए अन्न इत्यादि प्राप्त होता हैं, वही दूसरी तरफ जनसंख्या एवं उत्पादन अधिक होने के कारण नगरीय केन्द्रों को जनशक्ति मिलने के ही साथ विनिमय को बल मिलता है जो नगरों के विकास के लिए आवश्यक है। अतः इस शोध–पत्र में इन्हीं संदर्भों को ध्यान में रखते हुए विश्लेषण और विवेचन किया गया है।

बीज शब्द : सांस्कृतिक परिवेश, ऐतिहासिक परिवेश, अर्न्तसम्बंध, नगरीय

संस्कृति, दोआब, भू–ऐतिहासिक तत्व।

अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य घाघरा दोआब क्षेत्र में स्थित नगरीय केन्द्रों के भू–ऐतिहासिक तत्वों का विश्लेषण और विवेचन करके उस क्षेत्र की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को उजागर करना है ताकि उन संसाधनों का ठीक–ठीक उपयोग किया जा सके।

विधि तंत्र – प्रस्तुत अध्ययन में पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों और संकल्पनाओं का विवेचनात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है तथा विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया है।

परिचय

नगर चाहे वह पूर्ण विकसित ही क्यों न हो, सर्व प्रथम एक छोटी बस्ती या स्थान के रूप में अस्तित्व में आ जाता है। नये नियोजित नगरों को छोड़कर उनका धीरे–धीरे विकास होता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से ऐसे केन्द्रों का अन्योन्य सम्बन्ध होता है, जिससे विनिमय के केन्द्रों के रूप में उनका अस्तित्व विभिन्न जटिल भौतिक एवं मानवीय कारकों पर निर्भर होता है।[1] इसके साथ ही साथ राजनैतिक तथा ऐतिहासिक तत्व भी उनके विकास की आवश्यकताओं को प्रभावित करते हैं। इसीलिए नगरों की संरचना, कार्यो, प्रक्रियाओं, सम्बन्धों एवं नियोजन आदि तथ्यों का अध्ययन करने से पूर्व इस

बात का ज्ञान अपेक्षित एवं उपादेय है कि भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न प्रकार एवं स्वरूपों में नगरों की उत्पत्ति कैसे हुई।

इस ध्येय की पूर्ति के लिए उत्पत्ति मूलक या ऐतिहासिक उपागम से एवं एक पूर्ण इकाई के रूप में उनके अध्ययन पर जोर दिया जाना स्वाभाविक है।[2] क्योंकि जिस प्रकार प्राकृतिक भू–दृश्यों के विकास, प्रक्रमों के अध्ययन में वर्तमान भूत की कुन्जी होती है।

किसी भी क्षेत्र में एक बस्ती (नगरों) की उत्पत्ति एवं विकास के पीछे उसके भौतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के साथ ही उसका इतिहास भी होता है।[3] जब कभी हम नगरों का वर्णन उनके ऐतिहासिक सन्दर्भ में करते हैं तो इससे हमारा तात्पर्य उनकी उत्पत्ति का आधार, स्थापना, विकास, वृद्धि या फैलाव तथा समृद्धि और ह्रास की अवस्थाओं से होता है और केन्द्रों को पूर्ण इकाई के रूप में स्वतन्त्र एवं तुलनात्मक दोनों दृष्टिकोण से देखा जाता है।[4] इस प्रकार नगरों की उत्पत्ति एवं विकास के अन्तर्गत भूत से वर्तमान तक उनके स्वरूप, कार्य, एवं अर्न्तसम्बन्धों में हुए परिवर्तन का अध्ययन सम्मिलित है।

नगरों की उत्पत्ति एवं विकास के प्रमुखतः एक ही कारक हैं, उत्पत्ति के कारकों को अधिक वेग से कार्य करना आवश्यक है। उत्पत्ति जनक प्रारम्भिक

वेग का प्रभाव कुछ न कुछ बाद तक भी कायम रहता है, जो इसके विकास के लिए एक आधारशीला बनाता है जिनके सम्पादन की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती रहती है। जिसके फलस्वरूप नगरों के विकास का आधार उत्पन्न हो जाता है।[5] नगरों की उत्पत्ति के मूल में आर्थिक आधार ही मूलभूत तत्व है, किन्तु साथ ही साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रशासकीय तथा राजनैतिक तत्वों का भी कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है। सभ्यता के विकास के आरम्भिक चरणों में प्राथमिक क्रियाओं यथा कृषि उत्पादन का कार्य ही अधिक होता था क्योंकि इस समय तक मनुष्य की अर्थव्यवस्था भी लगभग पूर्णतः निर्वाहन स्तर की थी।[6] कालान्तर में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाओं के विकास के साथ–साथ नगरों का जन्म इन्ही क्रियाओं के सम्पादनार्थ प्रारम्भ हुआ।[7]

विश्लेषण एवं व्याख्या

नगरों का मूल विकास एक प्रभावशाली कृषि तन्त्र में अधिक होता है, क्योंकि इससे जहाँ एक तरफ जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए अन्न इत्यादि प्राप्त होता हैं, वही दूसरी तरफ जनसंख्या एवं उत्पादन अधिक होने के कारण नगरीय केन्द्रों को जनशक्ति मिलने के ही साथ विनिमय को बल मिलता है जो नगरों के विकास के लिए आवश्यक है।

नगरों की उत्पत्ति एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को दो

वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैं –

1. भौतिक कारक, 2. सांस्कृतिक कारक

यद्यपि नगर अपने आप में सांस्कृतिक (मानवीय) सृजन के प्रतिफल होते है, किन्तु उनकी उत्पत्ति का प्रमुख आधार भौतिक कारक द्वारा ही तैयार होता है। क्योंकि भौतिक कारकों के द्वारा प्रदत्त सुविधाओं के मूल आधार पर ही मानवीय कारक नगरों के विकास के लिए प्रतिक्रिया करना प्रारम्भ करते हैं। नगरों के अविर्भाव के लिए सबसे महत्वपूर्ण भौतिक कारण निम्नलिखित हैं–

1. प्राकृतिक स्थल, 2. प्राकृतिक परिस्थिति, 3. जलापूर्ति

ये तीनों तत्व जलवायु जलनिकास एवं अन्य प्राकृतिक दशाओं के ऐच्छिक सहयोग के साथ मिलकर इस आधारभूत धरातल का निर्माण करते हैं। जिस पर नगरों का भावी स्वरूप खड़ा होता है।[8]

नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में मानवीय तत्वों का भी विशेष योगदान होता है फिर भी भौतिक एवं मानवीय दोनों प्रकार के तत्व एक दूसरे के पूरक के रूप में और परस्पर समन्वित ढंग से कभी पूर्वगामी तो कभी अनुगामी होकर कार्य करते हैं। मानवीय तत्वों का अतिशयात्मक स्वरूप मानव वरीयता

में दिखाई पड़ता हैं। यद्यपि मनुष्य की वरीयता को भी बहुत से तत्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रित करते रहते है, जिसमें से सभी को पूर्ण रूपेण समझना असम्भव है, इस लिए कभी–कभी मानव पसन्द को संयोग की संज्ञा देकर समझाने का प्रयास किया जाता है।[9]

कुछ नगरीय केन्द्रों का अर्विभाव एवं विकास क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं से स्वतः प्रेरित होकर होता है, जब कि कुछ नगरों के उत्पत्ति एवं विकास प्रशासकीय मुख्यतः सुरक्षा केन्द्र, किला, महल, राजनैतिक प्रभाव आदि कृत्रिम शक्तियों के परिणाम स्वरूप होता है। (जैसे राजनीतिक प्रभाव के चलते मऊ नगर का विकास काफी तीव्र गति से हुआ है।) कई केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों शक्तियों के संयुक्त प्रभाव से ही होता है।[10]

मानव समाज के लिए आवश्यक विनिमय कार्य के सम्पादन के लिए एक बहुगम्य स्थान पर एक छोटे स्थानीय बाजार या केन्द्र की उत्पत्ति भी स्वाभाविक रूप से हो सकती है, जहॉ क्षेत्र के चारो ओर से लोग एकत्रित हो सके और जहॉ नये केन्द्र को जन्म देने के लिए सेवापूर्ति की मॉग हो, अर्थात किसी केन्द्र की दूर स्थिति के कारण आवश्यक पूर्ति कम से कम हो। ऐसे केन्द्रों की उत्पत्ति विशेषतया तटस्थ संगम स्थलों पर होती है।। जो प्रायः

अपने क्षेत्र के केन्द्र स्थल (नगर स्थल) होते हैं। ऐसे क्षेत्रों में जहॉ कुछ नगर पहले से ही अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है, नए नगर केन्द्र का अर्विभाव दो नगर केन्द्रों के मध्यवर्ती सीमा पेटियों में होता है एवं वर्तमान नगर केन्द्रों से दूर अर्थात उनके सेवा क्षेत्र से दूर स्थित होते हैं। जब छोटे नगर केन्द्र या वर्तमान नगर केन्द्र केन्द्रीय वस्तुओं की बढ़ती हुई मॉगों या अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति सफलता पूर्वक करने में समर्थ नहीं होते है, नये नगरीय केन्द्रों का विकास होना स्वाभाविक है, या तो पुराने केन्द्रों की सेवा क्षमता बढ़ जाती है या उपर्युक्त ढंग से सुविधा जनक बिन्दुओं पर जहॉ आर्थिक दूरियॉ कम होती हैं, नये नगरीय केन्द्रों का विकास होना स्वाभाविक है।[11]

वस्तु निर्माण, उद्योग एवं यातायात भी नगरीय केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उत्तरदायी कारक है। एक नगर के रूप में या विनियात्मक कार्यो के सम्पादन के लिए यातायात का विशेष महत्व है, यहीं कारण है कि यातायात के संगम स्थलों पर मार्ग अन्तर्क्षेत्रीय या अर्न्तकेन्द्रीय धमनियों के रूप में कार्य करते है। जिनकी अनुपस्थिति में नगर एवं उनके प्रभाव क्षेत्र के भिन्न–भिन्न भाग प्रभावशाली ढंग से एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित रह सकते है। जिसके परिणाम स्वरूप सेवाओं एवं आपूर्ति के आदान–प्रदान हेतु यातायात साधनों का समुचित विकास होना आवश्यक है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि यातायात एवं उद्योग आधुनिक युग में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास की सबसे महत्वपूर्ण शक्ति है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि नगरों की उत्पत्ति एवं विकास सभ्यता, अर्थव्यवस्था एवं बस्तियों के क्रमिक विकास से सम्बन्धित है। नये नगरों का जन्म नवीन केन्द्रों के रूप में या छोटी बस्ती से विकसित होता है। अध्ययन क्षेत्र निचला गंगा–घाघरा दोआब में भी नगरों की उत्पत्ति छोटी बस्ती से विकसित होकर ही हुआ है। ऐसी छोटी बस्तियों से नगर के रूप में विकास विभिन्न जटिल कारकों पर आधारित रहा है। जैसे– सामयिक बाजार, मेले, किला, महल, सुरक्षा के स्थल, सांस्कृतिक तत्व नगरों की उत्पत्ति के आधार का कार्य करते हैं। नगरों के नामकरण, विश्लेषण से भी उनकी उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त किया जा सकता है। उपर्युक्त पृष्ठभूमि में, बलिया, मऊ, गाजीपुर, आजमगढ़, वाराणसी तथा जौनपुर जनपद एवं नगरों के भू–ऐतिहासिक तत्वों पर दृष्टिपात करते हैं।

एक जनपद के रूप में मऊ जनपद का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है, किन्तु इसके पहले यह क्षेत्र आजमगढ़ एवं बलिया जनपद का अंग था। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाय तो अध्ययन क्षेत्र में मानव अधिवास का इतिहास अति प्राचीन है। मानव अधिवास के विकास क्रम में ही कालान्तर में नगरों की

उत्पत्ति हुई एवं उसका विकास निरन्तर जारी रहा। इसकी पुष्टि इस क्षेत्र में व्याप्त, दंत कथाओं, परम्परागत सूचनाओं पुरातात्वीय विवेचनों एवं स्थान, नाम, विश्लेषण से हो जाती है।[12]

तमसा नदी के किनारे बसा मऊ नगर के इतिहास पर दृष्टिगत करने से यह ज्ञात होता है कि **यह क्षेत्र आश्रम तथा तपोभूमि महर्षि देवेल ने मुहम्दाबाद तहसील में नदवासराय कस्बे के निकट अपनी तपस्या पूर्ण की थी**, उन्हीं के नाम पर देवलास आज भी धार्मिक जनों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

महर्षि बाल्मिकी ने तमसा नदी के किनारे अपनी अध्यात्मिक एवं साहित्यिक साधना की थी। रामायण काल में राम वनागमन के समय इसी क्षेत्र में तमसा नदी के किनारे निवास किये थे। इस प्रकार पौराणिक लेखों एवं कथाओं के पढ़ने–सुनने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही महर्षि मुनियों के आश्रम रूपी सेवा केन्द्र के रूप में अस्तित्व में आ चुके थे। जहॉ धार्मिक कार्यो का सम्पादन होता था। यह केन्द्र कालान्तर में नगरों की उत्पत्ति के आधार बने। इस तरह देखा जाय तो भारत में नगरों की उत्पत्ति की आधारशीला प्राचीन काल में ही स्थापित हो चुकी थी। जब यहॉ प्राचीन समुदायों एवं गणराज्यों के शासकों, बौध, जैन एवं हिन्दू धर्म के

प्रचारक तथा मौर्यवंश, गुप्तवंश एवं हर्ष के साम्राज्यों के अधीन प्रशासनिक स्थिरता रूचि एवं सुरक्षा के महत्व के कारणों ने ईसा पूर्व सातवीं शताब्दी से प्रारम्भ करके उपमहाद्वीप के उत्तरी भाग में अनेक नगरों की स्थापना करवाया।[13] जिसका विकास प्रशासनिक गढ़ों, राजधानियों तथा धार्मिक केन्द्रों के रूप में हुआ।

रामायण काल में अयोध्या का साम्राज्य इस क्षेत्र तक फैला हुआ था। घोसी तहसील में स्थित वन 'अवध क्षेत्र' में भगवान राम के कुछ समय तक वन बिहार की बात कहीं जाती है। 'देवलास' को अयोध्या की उपराजधानी कहा जाता है। जो तत्कालीन नगर के रूप में विकसित हो चुका था।

सरयू नदी के किनारे जहॉ वर्तमान में दोहरीघाट कस्बा है, वहॉ चौदह वर्ष के बनवास से लौटने के पश्चात **राम** तथा **परशुराम** से दुबारा मुलाकात का प्रसंग सुनने में आता है। इसी लिए यह स्थान **दो–हरी** के मिलने के नाम से **दोहरीघाट** कहलाया जो उस समय से लगातार विकसित होते–होते आज नगर का रूप ले चुका है। मुहम्दाबाद कस्बे के पास राजा **कीचक** की कोट स्थित घर आज **राजा घोस** के नाम पर घोसी कस्बे में,परिणितं हो गया। **राजा नहुप** की जीर्ण–शीर्ण कोट का अवशेष आज भी यहीं विद्यमान है।

प्राचीन काल में क्षेत्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में अनेक जातियों का

आधिपत्य था। सर्व प्रथम इस क्षेत्र में राक्षसों का प्रभुत्व था, जो अत्यन्त हिंसक थे। ये नदियों के किनारे जंगलों में रहते थे। इसके बाद असुर भी यहॉ के मूल निवासी माने जाते है। असुर ही जंगलों को साफ कर इस क्षेत्र में कृषि कार्य को बढ़ावा दिये और अनेक किलो का निर्माण कराया। उसके बाद चेरू और भरों ने अपना आधिपत्य कायम किया। अध्ययन क्षेत्र को **आवास योग्य बनाने हेतु भरों एवं चेरूओं की बड़ी ही रचनात्मक भूमिका रही** एवं समय बीतने पर भर इतने प्रभावशाली हुए कि **इन्हें राजभर कहा जाने लगा। चेरूओं की राजधानियॉ चकरा, चकमाना, मझवारा, चकशाह, भारूख, भैरोपुर, किरकुल, सुल्तानपुर एवं चन्दर पट्टी आदि स्थानों पर थी।** किन्तु इनके राजाओं के मरने के पश्चात इनके इन राजधानियों का अस्तित्व भी समाप्त हो गया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में भले ही अध्ययन क्षेत्र में किसी बड़े नगर की उत्पत्ति एवं विकास न हुआ हो, किन्तु, तत्कालीन राजाओं की राजधानियॉ तत्कालीन नगर केन्द्रों के रूप में विकसित थीं, जिनमें से अधिकांश का तो अस्तित्व ही समाप्त हो गया, जब कि कुछ केन्द्र बाद में नगर केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए आधार का काम किये, जिनमें **मऊनाथ भंजन, घोसी, मुहम्दाबाद, दोहरीघाट** आदि मुख्य हैं।

अध्ययन क्षेत्र में **राजपूत औपनिवेशीकरण** 13वीं शदी में प्रारम्भ हुआ और तीन सदियों तक क्रियाशील रहा। विदेशियों के साथ संघर्षरत राजपूत वंशों ने जहॉ अवसर पाया अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। विभिन्न राजपूत वंशों ने अपने मूल स्थान का परित्याग कर इस क्षेत्र के विभिन्न भागों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर छावनियों एवं किलों का निर्माण कराया जो अब नष्ट हो चुके है।

राजपूत औपनिवेशीयकरण की अवधि में उपनिवेश जातियों ने विशिष्ट स्थलों पर अधिवास स्थापित कर अपने वंशीय क्षेत्र का अस्तित्व स्थापित किया। राजपूत वंशीय तत्कालीक गढ़ धीरे–धीरे बाजार केन्द्र एवं कस्बा का रूप धारण कर लिए **जिनमें रतनपुरा, चकरा, महुआपार, सुरजपुर, कटघरा शंकर, बहादुरपुर, शिशवा, दुबारी, चिरइया कोट एवं पिपरीडीह मुख्य है।** जिनमें से **रतनपुरा, दुबारी एवं चिरइया कोट** वर्तमान समय में कस्बा का रूप धारण कर लिए हैं।

मध्यकाल का दूसरा पक्ष मुस्लिम शासकों का रहा है, हिन्दू राजसत्ता की समाप्ति के पश्चात इस भू भाग पर **जौनपुर** शासन का आधिपत्य हो गया, जिसकी शुरूआत 1359 ई0 से मानी जाती है। इस दौरान **मुस्लिम शासकों** ने जंगलों को साफ कर जगह–जगह, **परिकोट,** किला, भवन एवं सुरक्षा चौकी

स्थापित कराया, जहॉ धीरे–धीरे मानव बसाव शुरू होते–होते नगरीय क्रिया–कलाप, विकसित हो गये एवं अनेक कस्बों का विकास हुआ। जिनमें **मुहम्दाबाद, मऊनाथ भंजन, कुर्थीजाफरपुर अदरी** आदि मुख्य है। मुस्लिम काल में धार्मिक, प्रशासनिक, आवासीय एवं परिवहन से सम्बन्धित केन्द्र के रूप में तथा व्यापारिक केन्द्र के रूप में इन केन्द्रों की उत्पत्ति हुई।

अध्ययन क्षेत्र में मुस्लिम काल के धार्मिक केन्द्र के रूप में **दोहरीघाट, देवलास** एवं **वनदेवी** की उत्पत्ति हुई। **दोहरीघाट** कस्बे का विकास सरयूनदी के किनारे स्थित होने से **हिन्दू तीर्थस्थल** के रूप में हुआ। यहॉ आज भी सरयू नदी के किनारे दो घाट **रामघाट** एवं जानकीघाट प्रसिद्ध है, यह भी कहा जाता है कि चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटते समय इसी स्थान पर राम से परशुराम की भेट हुई। इस लिए **दो–हरियों** के मिलन के स्थान को **'दोहरीघाट'** कहा जाने लगा और यहॉ पर नगर का विकास हुआ।

मुस्लिम काल में अध्ययन क्षेत्र में धार्मिक केन्द्रों के विकास के पश्चात इस क्षेत्र में प्रशासनिक केन्द्रों की भी उत्पत्ति एवं विकास हुआ जिसमें **मऊनाथ भंजन** नगर मुख्य है। जो **शाहजहॉ** के शासन काल में जहॉ **आरा बेगम** की एक जागीर थी, जहॉ पर उन्होंने एक कटरा बाजार बसाया था

जिससे इसका नाम **जहानाबाद** पड़ा और बाद में मऊनाथ भंजन हो गया। **मऊनाथ भंजन** के नामकरण के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है। कि **मऊ नामक नट का भंजन (मारा गया) इसी भूमि पर हुआ, इसी लिए इस स्थान को 'मऊ नट् भंजन' कहा जाने लगा,** जो बाद में अपभ्रन्श होकर 'मऊनाथ भंजन' हो गया। आजमगढ़ जनपद के गजेटियर में लिखा है कि ताहिर नामक संत ने उस राक्षसी प्रवृत्ति वाले नट को यहॉ से भगाया था जिसके बारे में लिखा है कि राक्षस को दूर भगाने वाली भूमि **मुहम्दाबाद सैयद मुहम्मद** की छावनी थी, उन्हीं के द्वारा **मुहम्दाबाद** कस्बे का उदय हुआ।

मुस्लिम काल में अध्ययन क्षेत्र में धार्मिक प्रशासनिक एवं आवासीय केन्द्रों के विकास के साथ परिवहन (खासतौर से जल परिवहन के नदी घाट स्थल) केन्द्रों का विकास हुआ। जिसके अर्न्तगत **मऊ, मुहम्दाबाद, दोहरीघाट एवं दुबारी मुख्य है।** जहॉ से दुबारी को छोड़कर शेष तीन आज नगर का रूप ले चुके है। **यहॉ से नदियों द्वारा व्यापार किया जाता है।**

मुस्लिम काल में अध्ययन क्षेत्र में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में व्यापारिक केन्द्रों ने भी प्रमुख भूमिका निभाई **'आइने अकबरी'** के अनुसार प्राचीन काल में मऊ एक ऐसा व्यापारिक केन्द्र था जहॉ कपड़े का थोक व्यापार एवं इत्र खरीदने हेतु वाराणसी, जलालाबाद एवं अन्य स्थानों से

व्यापारिक वर्ग आते थे। **कोपागंज एवं मुहम्दाबाद** पहले से ही कपड़े एवं व्यापार हेतु आकर्षण का केन्द्र था, जहॉ धीरे–धीरे बुनकरों ने बस्तियों हेतु नमक, लकड़ी एवं तम्बाकू का व्यापार होता था।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि अध्ययन क्षेत्र के मुस्लिम काल में नगरों का उदभव एवं विकास प्रारम्भ हो गया था। जिसका मुख्य कारण मुस्लिम शासकों की अपने शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु किला एवं अपने नाम को चिरस्थायी करने हेतु उस स्थान को विकसित करने का प्रयास था। **इस तरह मुस्लिम काल में खासतौर से मऊ नाथ भंजन, मुहम्दाबाद, कोपागंज, अदरी आदि नगर अस्तित्व में आ चुके थे एवं इनका विकास प्रारम्भ हो चुका था।**

यद्यपि कि भारत में ब्रिटिश शासन 1707 ई0 से पहले ही कायम हो चुका था किन्तु 1757 ई0 में **प्लासी के युद्ध** के पश्चात इसका प्रभाव तेजी से बढ़ने लगा और 1801 ई0 में मऊ के भू–भाग पर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अपना अधिकार जमा लिया।

यद्यपि कि जिन नगरों की उत्पत्ति मध्यकाल खासतौर से मुस्लिम काल में हो चुकी थी। उनके सन् 1832 ई0 में प्रशासनिक इकाईयों की स्थापना होने एवं स्वतन्त्रता हेतु सामयिक गतिविधियों का केन्द्र बनने से विकास की

एक नई लहर आ गई। प्रशासनिक व्यवस्था के अर्न्तगत **घोसी** को तहसील मुख्यालय बना दिया गया। **मऊ, मुधबन** व **घोसी** में नये पुलिस थाने स्थापित किये गये। यहीं नही इन केन्द्रों में अस्पताल, बैंक, मनोरंजन, पुस्तकालय, व्यायामशाला, वाचनालय, धर्मशाला, शैक्षिक संस्थाएँ, परिवहन सुविधाएँ आदि की भी स्थापना की गई, जिससे इन नगरीय केन्द्रों के विकास करने का सु–अवसर प्राप्त हुआ।

ब्रिटिश काल में नगरीय केन्द्रों के विकास में रेलवे ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस काल में तीन रेलवे लाइनों का विकास हुआ जिसमें सबसे पहले वाराणसी से भटनी रेलवे लाइन विछाई गई। इसके चलते मऊ नाथ भंजन नगर का तेजी से विकास हुआ। दूसरी रेलवे लाइन **बलिया शाहगंज 1903 में** शुरू हुई। इसके चलते भी **मऊ एवं मुहम्दाबाद** नगरों को विकसित होने का अवसर मिला। तीसरी रेलवे **लाइन इन्दारा–दोहरीघाट** तक बिछाई गई, जो 1904 में चालू हुई। इस रेल लाइन के चलते **कोपागंज, घोसी, अमिला एवं दोहरीघाट** नगरों को विकसित होने का अवसर मिला।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में ब्रिटिश काल में प्रशासनिक इकाईयों की स्थापना तथा सड़क एवं रेल परिवहन के विकास ने **मऊ, घोसी, कोपागंज, मुहम्दाबाद, अमिला एवं अदरी** आदि नगरों तथा अनेक केन्द्रों के

विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतन्त्रता पश्चात अध्ययन क्षेत्र में नगरों की उत्पत्ति एवं विकास में प्रशासनिक इकाई एवं सड़क विकास एवं व्यापारिक गतिविधियों ने अहम भूमिका निभाई। छोटी रेलवे लाइनों का बड़ी रेलवे लाइन में बदल जाने से भी इस क्षेत्र का सम्पर्क देश के अन्य व्यापारिक केन्द्रों से सीधे रूप से जुड़ गया, जो इस क्षेत्र के नगरीय केन्द्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

विशेष रूप से **खैदाबाद, अमिला, दोहरीघाट, कोपागंज, मुहम्दाबाद, कुर्थीजाफरपुर,** नगरों के विकास में सड़कों ने अहम भूमिका निभाई। कई ऐसे नगर केन्द्र है जो सड़कों के विकास के चलते नगर की श्रेणी में आने की तरफ अग्रसर है। जिनमें **नदवासराय, बेलौझा, सूरजपुर, मझवारा, खुरहट, रतनपुरा, कटघरा शंकर, चिरैयाकोट, गोठा, मुहम्मदपुर, पिढवल, मर्यादपुर, एवं मधुबन आदि मुख्य है।** स्मरण रहे कि 1972 में घाघरा नदी पर सड़क पुल के निर्माण के पश्चात दोहरीघाट कस्बा परिवहन संगम बिन्दु के रूप में विकसित हुआ।

स्वतन्त्रता पश्चात अध्ययन क्षेत्र में निर्माण उद्योग एवं व्यापारिक गतिविधियों ने भी नगरों के विकास में अहम् भूमिका निभाई है। **मऊ नगर में**

सूती मिले, फर्टिलाइजर पलाण्ट, साइजिंग एवं कैलेण्डरिंग, पावर हाउस, सोडाफैक्टरी, पावरलूम, अच्छी चिकित्सकीय व्यवस्था ने मऊ नगर के विकास को गति प्रदान की, जबकि **दोहरीघाट में दालमिलों की स्थापना मुहम्दाबाद, खैराबाद कुर्थीजाफरपरु, घोसी, कोपागंज एवं अदरी में हाथकरघा उद्योग** की स्थापना ने इन नगरीय केन्द्रों को विकसित होने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किये है।

व्यापार केन्द्र के रूप में मऊ, मुहम्दाबाद, अदरी, घोसी आदि केन्द्रों से पावरलूम पर निर्मित साड़ियों का व्यापार आजमगढ़, बलिया, वाराणसी, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, गाजीपुर एवं जौनपुर आदि जिलों को होता है। जिससे इन नगरों में व्यापारिक गतिविधियों के बढ़ने से इनका तेजी से विकास हुआ है।

यदि स्वतन्त्रता पश्चात नगरीय केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास का अवलोकन करे तो यह तथ्य सामने आता है कि इस क्षेत्र में **अमिला, कोपागंज, अदरी, मुहम्दाबाद एवं खैराबाद 1991** में इन केन्द्रों के अतिरिक्त, कुर्थीजाफरपरु भी नगर की कोटि में आ गया। इस तरह 2001 की जनगणना में 9 अधिवास नगर की कोटि में आ गये।[14] जिनमें से **मऊ नाथ भंजन** एवं **कोपागंज** नगरपालिका परिषद तथा **दोहरीघाट अमिला, घोसी, अदरी एवं**

मुहम्दाबाद, नगर पंचायत तथा कुर्थीजाफरपुर एवं खैराबाद जनगणना नगर है।

इस प्रकार मऊ जनपद नगरीय केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास का विवरण निम्न प्रकार देखने को मिलता है।

मऊनाथ भंजन नगर टोंस नदी के दाहिने किनारे पर $25^{0}56'$ उत्तरी अक्षांश एवं $83^{0}33'$पूर्वी देशान्तर के बीच अवस्थित हैं। इसका क्षेत्रफल 7.77 वर्ग किमी तथा जनसंख्या 212657 है। राष्ट्रीय राजमार्ग इस नगर को आजमगढ,बलिया,गाजीपुर तथा मोहम्मदाबाद से जोड़ता है। यहाँ पर पूर्वोत्तर रेलवे का एक जंक्शन भी है। मऊ नाथ भंजन नगर का इतिहास आजमगढ़ जनपद से जुड़ा हुआ हैं क्योंकि यह पूर्व में इसी जनपद का एक भाग था। इसकी उत्पत्ति का कोई अलग तथा निश्चित कारक नही हैं। स्थानीय परम्परा के अनुसार मलिक ताहिर नाम का सम्राट जिसके द्वारा बनवायी गई मस्जिद आज भी यहाँ हैं,उसी के द्वारा आकर मऊ को बसाया गया और पहले से जो लोग यहाँ पर रहते थे उनको हटा दिया गया।

आइने अकबरी के अनुसार मऊ नाथ भंजन शेखों के द्वारा शासित था और वाराणसी तथा जलालाबाद की तरह ही प्रसिद्ध था। जो इलाहाबाद के आस–पास के कस्बों मे अपने सूती कपड़ों के निर्यात के लिए प्रसिद्ध था।

यह नगर मुगल साम्राज्य के परगना का मुख्यालय तथा काजी का निवास स्थान हुआ करता था। बदायूमी के अनुसार मुहम्मदाबाद,मऊनगर पर आश्रित था। शाहजहाँ के शासन काल मे यह परगना जहाँ आरा बेगम (सम्राट की लड़की) के जागीर मे शामिल किया गया और इसका नया नाम जहानाबाद पड़ा। बेगम की आज्ञा से कटरा एवं बाजार स्थल का निर्माण हुआ जो औरंगजेब के शासन में भी रहा। उस समय इसमे 84 मुहल्ले तथा 360 छोटी–बड़ी मस्जिदें थीं। यहाँ पर सर्वाधिक आबादी जुलाहों (मुस्लिम) की थी। हिन्दूओं के परिवार धागे बुनने या कटुआ बनाने का कार्य करते थे। यह सूती वस्त्र उद्योग का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ पर बहुत ls लोगों की आय का प्रमुख स्रोत यह उद्योग ही था। गोरखपुर के कलेक्टर जिसनें अवध के आमिल से इस स्थान का 1801 में कार्यभार ग्रहण किया, ने रिपोर्ट दी कि यह स्थान व्यापार के क्षेत्र में पूरे भारत में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके बाद धीरे–धीरे इसका स्थान पिछले वर्षो में काफी हद तक गिर चुका हैं। इस नगर ने वास्तव में अपनी पिछली समृद्धता को कभी प्राप्त नहीं किया। परन्तु ब्रिटिश शासन के प्रथम दशक में यह कुछ समय तक बचा रहा।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार होने तक निजी उद्यमियों ने व्यापार को बनाये रखा लेकिन ईग्लैण्ड से कपड़ा तथा धागे के

आगमन तथा उत्थान ने इसे (मऊ के व्यापार को) अवनति की ओर ही ले गये। और स्वन्त्रता के पश्चात इसने पुनः अपने महत्व को प्राप्त किया। यहाँ की बनारसी साड़ी उद्योग प्रदेश एवं देश में अपना उच्च स्थान कायम की हुई है। यहाँ पर एक स्वदेशी सूती मिल तथा एक चक्की मिल भी है जो बनारसी साड़ी का निर्माण करती है।

घोसी – घोसी नगर $26^{0}6'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}15$ पूर्वी देशान्तर पर जिला मुख्यालय से 38 किमी दूर अवस्थित हैं। इस नगर का क्षेत्रफल 1.4 वर्ग किमी हैं तथा वर्तमान समय में इसकी जनसख्या 35903 हैं। यहाँ पर इसी नाम से तहसील मुख्यालय भी हैं । यह आजमगढ़ से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ हैं तथा यहाँ पर पूर्वोत्तर रेलवे का एक स्टेशन भी है। यह स्थान निःसन्देह कुछ प्राचीनता को लिए हुए है जो वर्तमान समय की तुलना मे पहले बहुत बड़ा था। यह कहा जाता है कि मऊ में बसे हुए जुलाहे 300 वर्ष पूर्व घोसी में ही रहा करते थे। परन्तु समय एवं परिवेश के साथ उनका समायोजन हुआ जिसके फलस्वरूप वे मऊ मे बस गये। यहाँ पर एक मिट्टी का किला पाया गया है, जिसे नहुष का किला कहा जाता है। यह स्थान नहुषी से जोड़ता है जो हिन्दू राजा नहुष के नाम पर हैं। जिन्होंने इस शहर की स्थापना की थी।

अमिला– अमिला गोरखपुर–वाराणसी राष्ट्रीय राजमार्ग 29 से निकलकर अजमतगढ़ जाने वाली सड़क पर 2 किमी की दूरी पर स्थित हैं। पहले यह नगर खाड़सारी उद्योग का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था।

सड़क पर स्थित होने से यहाँ आवागमन की अच्छी सुविधा है। अमिला में व्यापारिक क्षेत्र के साथ शैक्षणिक एवं सास्कृतिक सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। 3.66 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र पर विस्तृत इस नगर की कुल जनसंख्या 17357 है जिनमें 50.95 प्रतिशत पुरूष और 40.05 महिलाएं हैं। अमिला नगर जनपद के 0.08 प्रतिशत भू–भाग पर विस्तृत है तथा नगरीय केन्द्रों में 5वाँ बड़ा नगर हैं। यहाँ जनपद की कुल जनसंख्या 0.55 प्रतिशत तथा नगरीय जनसंख्या 7. 69 प्रतिशत निवास करती है। जनसंख्या के आधार पर यह जनपद का तीसरा बड़ा नगर हैं। यहाँ एक डाक घर,जूनियर हाई स्कूल,एक माध्यमिक विद्यालय,राजकीय चिकित्सालय एवं उर्दू मदरसा आदि सांस्कृतिक केन्द्र हैं।

दोहरीघाट– यह स्थान $26^0$16′ उत्तरी अक्षांश एवं $83^0$31′पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। जो घाघरा नदी के किनारे बसा हुआ है। यही से होकर राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरता है जो गोरखपुर,मऊ,गाजीपुर होकर वाराणसी को जाता है तथा आजमगढ़ भी राष्ट्रीय राजमार्ग से जुड़ा हुआ हैं। यह नगर जिला मुख्यालय से 59 किमी तथा तहसील मुख्यालय से 18 किमी दूर है। यहाँ पर

इसी नाम से पूर्वोत्तर रेलवे का स्टेशन भी है। ऐसा कहा जाता है कि इस कस्बे की स्थापना जहाँन खान आजमगढ़ के राजा द्वारा की गई है। जिसने दोहरी घाट नगर का निर्माण कराया तथा चारों ओर घेरा बनवाया था,जो बाद मे आसफउद्दौला के स्थानीय अधिकारी द्वारा उसे और बढ़ाया गया और वर्तमान स्वरूप दिया गया।

कोपागंज– यह नगरीय केन्द्र $26^{0}01'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}34'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय से 38 किमी दूर अवस्थित है। यह मुहम्मदाबाद गोहना से 20.8 किमी तथा घोसी तहसील मुख्यालय से 10 किमी दूर है। यह नगर जनपद एवं तहसील केन्द्र से पक्की सड़कों द्वारा जुड़ा हुआ है। इसका क्षेत्रफल 0.98 वर्ग किमी तथा आबादी 306062 है। यहाँ पर पूर्वोत्तर रेलवे का एक रेलवे स्टेशन भी है।

यह एक प्राचीन स्थल पर बसा हुआ नगर जो पुराना कोपा के नाम से जाना जाता हैं एवं उस पर संवत 1592 या 1472 ई0 की तिथि अंकित हैं।

बलिया जनपद के नगरीय केन्द्रो का भू–ऐतिहासिक तत्व

[15]:– उत्तर प्रदेश के पूर्वी एवं अन्तिम छोर पर विद्यमान बलिया जनपद प्राचीन काल से ही अपनी विशेषताओं के लिए प्रख्यात रहा हैं लोक एवं पुराणों की कथाएं इसको **राजा बलि, महर्षि भृगु, दर्दर मुनि, राजा सुरध एवं लोरिकायन**

के नायक लोरिक से जोड़ती है। गंगा, घाघरा (सरयू) तथा तमसा (टौंस) नदियों के संगम स्थल ने जनपद को महान सांस्कृतिक परम्परा से जोड़ रखा हैं। त्रिनद से पवित्र इस धरती ने सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक परम्पराओं से अपनी विशिष्टता कायम रखते हुए अनेक कलाकारों, साहित्यकारों और राजनेताओं को जन्म दिया। यहाँ के मान्य संस्कृत विद्वानों ने काशी में जाकर अपने विद्वता के प्रकर्ष का प्रदर्शन कर विमल कीर्ति अर्जित की है। देश में जिस प्रकार गंगा एवं यमुना के संगम को 'प्रयागराज', गंगा व वरूणा के संगम को काशी क्षेत्र के नाम से प्रसिद्धि मिली, ठीक उसी तरह गंगा एवं तमसा के मध्यवर्ती भाग को **महर्षि भृगु** की तपस्या पूरी हो जाने के बाद **'भृगुक्षेत्र'** के नाम से जाना जाने लगा। यद्यपि राजकीय अभिलेखों में भृगुक्षेत्र का नाम चर्चित नहीं हो सका, परन्तु हजारों वर्ष बीत जाने के बाद भी जनमानस में **'भृगुक्षेत्र'** की स्मृति धूमिल न हो सकी तथा वर्तमान समय में भी उसकी लोकप्रियता प्राप्त है।

बलिया के नामकरण के सम्बन्ध में विभिन्न मान्यतायें, लोकप्रवाद के रूप में फैली हुई है उनमें प्रमुख दो हैं – ''बलिया का नामकरण महर्षि बाल्मिकी के नाम पर हुआ। कहा जाता है कि **कवि बाल्मिकी** वही गंगा तट पर तपस्या करते थे। उनकी तपस्थली पर बसा हुआ गांव कालान्तर में **बलमीकिया** से बलिया बन गया।'' द्वितीय– ''चक्रवर्ती **सम्राट बलि** ने अपनी

राजधानी का नाम **बलियाग** रखा। कालान्तर में बलियाग से 'ग' लुप्त हो गया और **बलिया** शेष रहा गया।''

जनपद के उत्तर–पश्चिम में सरयू, दक्षिण पूर्व में गंगा और पश्चिम–दक्षिण की ओर यह त्रिभुजाकार (टौंस) बहती है। प्राचीन काल में यह त्रिभुजाकार भू–भाग दल–दल वनों से आच्छादित था। नदियों के किनारे अनेक सन्त मुनियों एवं ऋषियों के आश्रम थे जिनमें कुछ स्थल आज भी प्रसिद्ध है, जिनकी याद में आज भी मेले लगते है। इन प्रसिद्ध सन्तों और मुनियों में **जमदग्नि, परशुराम, विश्वामित्र, बाल्मिकी, भृगु और दर्दर मुनि** आज भी बलिया की धार्मिक परम्परा में जीवित है। **जमदग्नि आश्रम खैराडीह नामक** गांव में, जो बलिया जनपद के पश्चिमोत्तर (घाघरा) के किनारे था। इसकी खुदायी भी हुई जिसमें गुप्तकालीन अवशेष मिले। इसी प्रकार मनियर नामक नगर बलिया से पूरब–उत्तर दिशा में है। इसी नगर में परशुराम भगवान का प्राचीन सुन्दर मन्दिर है जो उनकी तपस्थली पर बना कहा जाता है। यहाँ उनकी यादगार में मेला भी लगता है। आज का बलिया, बाल्मिकी आश्रम से बना है, जो बलमीकिया शब्द से है। महर्षि बाल्मिकी के परमप्रिय शिष्य के नाम पर भृगु आश्रम मुहल्ला एवं एक भृगु मन्दिर हैं।

देश प्रसिद्ध **ददरी मेला,** जो कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बलिया नगर

से पूरब गंगा एवं तमसा (टौंस) के तट पर लगता है, वह महर्षि भृगु की स्मृति को अक्षुण रखने के लिए महर्षि दर्दर ने आरम्भ किया था। इसलिए इस मेले को ददरी मेला कहते है। इसी प्रकार **लखनेश्वरडीह** जो बलिया से पश्चिम तमसा तट पर स्थित है, **भगवान राम** के छोटे भाई लक्ष्मण के द्वारा बसाया गया। बलिया जनपद के कुछ गांव आज भी प्राचीनता की याद को उजागर करते हैं। जैसे–कारों नामक ग्राम में भगवान कामरूप की तपस्थली, भीखमपुर ग्राम प्राचीन भिक्षुपुर जहाँ किसी जमाने में **फाह्यान नामक चीनी यात्री बौद्ध विहार** देखने आया था।

इस प्रकार, प्राचीन काल में भर एवं चेरू राजाओं की राजधानियां लखनेश्वर, पक्काकोट, जीराबस्ती देवढ़ी, भदांव, गाढ़ा, इन्दौली, भरतीपुर, भरौली, भरथांव, चेरूइयां, हल्दी, बयना, बांसडीह, चोरकेण्ड, चकरा, सुखपुरा, करनई, गायघाट, कोथ एवं गड़वार आदि सेवाकेन्द्र का कार्य करते थे किन्तु इन राजाओं के पतन के बाद इन केन्द्रों का अस्तित्व भी समाप्त हो गया। अब इन स्थानों पर मात्र इनके किलों के अवशेष ही विद्यमान हैं, जिनको आधार मानकर बाद में नये अधिवास विकसित हुए।

इस प्रकार बलिया जनपद के भू–ऐतिहासिक तत्वों के विश्लेषण से उनकी उत्पत्ति एवं विकास की प्रवृत्ति का ज्ञान प्राप्त होता हैं। वर्ष 2001 की

जनगणना के अनुसार बलिया जनपद मे कुल 9 नगरीय केन्द्र चिन्हित किये गये है। जिनके ऐतिहासिक प्रतिरूप को निम्न रूप में देखा जा सकता है।

बलिया – बलिया नगर का नाम बाल्मिकि की नाममाला से निकलता है,जिन्होंने रामायण की रचना की थी। अन्य परम्परा के अनुसार बलुआ मिट्टी से यह नाम विकसित हुआ। एक अन्य पारम्परिक सम्बद्धता यह है कि प्राचीन ऋषि भृगु ने यहाँ पर तपस्या की थी,जिससे इस क्षेत्र को भृगु क्षेत्र भी कहा जाता है। बलिया–बैरिया सड़क पर दक्षिण–पूर्व मे भृगु जी का मन्दिर भी है। जिसमे भृगु ऋषि एवं उनके शिष्य दर्दर मुनि की मुर्तियाँ हैं। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर दर्दर मुनि के सम्मान में प्रत्येक वर्ष ददरी मेला का आयोजन किया जाता है। यह भी कहा जाता है कि बलिया में पहले बुद्ध भगवान का मन्दिर था। जिसका चीनी यात्रियों फाह्यान एवं ह्वेनसांग ने उल्लेख किया है,परन्तु वर्तमान समय मे इसका कोई अवशेष नहीं मिलता है। बलिया नगर मूल रूप में गंगा नदी एवं कटहल नाला जो कुछ दूर जाकर गंगा में गिरता है,के संगम पर स्थित था। लेकिन 1873 एवं 1877 के बीच गंगा नदी के कटान से पुराना शहर समाप्त हो गया। उसके बाद नदी के उत्तर की तरफ आवास बनने लगे। परन्तु 1890 एवं 1893 के बीच बाढ़ आने के कारण नये नगर एवं तहसील भवनों का खतरा उत्पन्न हो गया और पुनः इस अवधि मे नगर बह गया। उस समय नगर केन्द्र को और अधिक दक्षिण कोरण्टाडीह में

स्थानान्तरित कर दिया गया। 1895 के बाद नदी ने अपनी धारा बदलनी शुरू कर दी और नदी के उत्तर मे बसाव प्रारम्भ हो गया। 1901 ई0 तक नये भवनों का निर्माण हो गया और 19 मार्च 1991 ई0 को जिला केन्द्र उस स्थान पर स्थानान्तरित कर दिया गया जो वर्तमान समय में दृष्टिगोचर है।

1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन मे जिन लोगों ने बलिदान दिया उन शहीदों की स्मृति में शहर के केन्द्र मे चौक पर शहीद पार्क का निर्माण कराया गया। नवम्बर 1871 ई0 मे बलिया को नगर बलिया बना दिया गया। यह स्थान मक्का,गेहूँ,टमाटर,तथा अन्य कृशि उत्पादों का बाजार स्थल रहा हैं। प्रशासनिक दृष्टि से बलिया को वार्डो मे विभाजित किया गया है। यहाँ पर 4 डिग्री कालेज,9 इण्टर कालेज, 10 जूनियर हाई स्कूल एवं 17 प्राथमिक विद्यालय हैं। एक आफिसर क्लब,पुलिस क्लब,चर्च,रेलवे स्टेशन,अस्पताल एवं बस स्टैण्ड हैं।

बाँसडीह — बाँसडीह नगर $25^{0}50'$ उत्तरी अक्षांश एवं $84^{0}4'$ पूर्वी देशान्तर पर अवस्थित हैं जो बलिया नगर से 17 किमी दूर उत्तर की तरफ है। बाँसडीह नगर सन् 1856 से ही बाँसडीह नगर एवं तहसील के नाम से चला आ रहा है। यह 1.5 वर्ग किमी0 के क्षेत्रफल पर फैला हुआ हैं जिसकी जनसंख्या वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 2011 हैं। मध्यकाल से यहाँ

पर चेरू राजपूतों का शासन था। 1942 के स्वतंत्रता आन्दोलन मे भी यह स्थान सक्रिय रहा है। इस आन्दोलन मे आन्दोलनकारियों ने पुलिस स्टेशन और तहसील पर अधिपत्य कर लिया था और 10 दिनों तक अपने अधीन रखा था। यहाँ पर एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र,महिला स्वास्थ्य केन्द्र,पशु चिकित्सालय,स्कूल कालेज,इत्यादि विद्यमान हैं। बाँसडीह मे टमाटर का उत्पादन बहुत अधिक मात्रा में होता चला आ रहा हैं। इसलिए यहाँ पर दो कोल्ड स्टोरेज हैं। प्रत्येक रविवार को यहाँ पर एक साप्ताहिक बाजार भी लगता है।

बिल्थरारोड – यह नगर $26^{0}8'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}50'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय से 60 किमी0 उत्तर–पष्चिम में स्थित हैं। यहाँ पर इसी नाम से ब्लाक एवं तहसील मुख्यालय है। यहाँ के विद्यार्थियों ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन मे अग्रगामी भूमिका अदा की और अपने संस्थानों को आन्दोलन मे भाग लेने के लिए छोड़ दिया। आन्दोलन करते हुए बहुत से छात्र गिरफ्तार भी हुए। यहाँ पर एक डिग्री कालेज,तीन माध्यमिक विद्यालय,एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र,एक पशु अस्पताल तथा एक कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र स्थित है। यहाँ मिर्चा,दाल,चावल,गुड़ एवं मछली का अन्तरजिला व्यापार केन्द्र हैं। इसकी आबादी 2001 की जनगणना के अनुसार 17234 एवं इसका क्षेत्रफल 1.5 वर्ग किमी0 है।

सहतवार – 1873 से टाउन एरिया के रूप में प्रशासित यह स्थान $25^{0}5'$ उत्तरी अक्षांश एवं $84^{0}10'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय के 27 किमी तथा तहसील से 10 किमी उत्तर–पूर्व की ओर अवस्थित हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसकी स्थापना महन्थ बालेश्वर नाथ द्वारा की गई। एक सामान्य आकार का यह कस्बा 1942 के आन्दोलन के समय की राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र रहा है। जब पुलिस स्टेशन तथा टाउन एरिया पर स्वतन्त्रता सेनानियों ने कब्जा कर लिया और 10 दिन तक इसका प्रशासन चलाया। यह स्थान अनाज व्यापार का एक अति महत्वपूर्ण केन्द्र है। यहाँ की नगदी फसलों में आलू, टमाटर एवं तम्बाकू प्रमुख हैं। इस नगर में एक हाईस्कूल, एक जूनियर हाईस्कूल एवं 2 प्राथमिक विद्यालय है। इसके अतिरिक्त परिवार नियोजन केन्द्र मातृत्व केन्द्र,बाल कल्याण केन्द्र,कोआपरेटिव बीज केन्द्र एलोपैथिक दवाखाना, आयुर्वेदिक दवाखाना,पुलिस स्टेशन एवं कुछ छोटी–छोटी इन्जिनियरिंग इकाईयाँ भी मिलती हैं। इस नगर का कुल क्षेत्रफल 2.1 वर्ग किमी एवं आबादी 19015 हैं।

मनियर – टाउन एरिया के रूप में 1873 ई0 से प्रशासित यह नगर $25^{0}59'$ उत्तरी अक्षांश एवं $84^{0}4'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय से 33 किमी दूर अवस्थित हैं। जो तहसील मुख्यालय बांसडीह से 16 किमी दूर है। घाघरा नदी के किनारे बसे होने के कारण अन्न व्यावसाय एवं व्यापार का यह

केन्द्र भी है, जो अपने आस–पास के क्षेत्रों को सेवाएं प्रदान करता हैं। इस नगर का क्षेत्रफल 3.7 वर्ग किमी हैं तथा वर्ष 2001 के अनुसार इसकी जनसंख्या 18787 हैं।

यहाँ पर एक ब्रह्म बाबा का मन्दिर है जिसे नवका बाबा के नाम से भी जाना जाता हैं। इसके अतिरिक्त मनियर नगर के पूर्वी छोर पर परशुराम बाबा का मन्दिर हैं, जहाँ पर प्रत्येक वर्ष मार्च–अप्रैल महीने में नवरात्र के अवसर पर विशाल मेला का आयोजन होता हैं।

रसड़ा – यह नगर जो इसी नाम से तहसील का मुख्यालय भी है, $25^0$51′ उत्तरी अक्षांश तथा $83^0$52′ पूर्वी देशांतर के मध्य जनपद मुख्यालय से 33 किमी दूर अवस्थित है। इस नगर का क्षेत्रफल 4.9 वर्ग किमी0 तथा जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 29238 हैं। यह प्रथम बार कण्डस सेंगर राजपूत तथा कुछ बनिया समुदाय द्वारा बसाया गया था। सेंगर राजपूतों के द्वारा रसड़ा नगर से भूमि–कर बाजार के रूप में वसूला जाता था। जब सरकार द्वारा बाजार कर 1788 लागू किया गया तो रसड़ा के सेंगर राजपूतों ने उसका घोर विरोध किया एवं हिंसा के बल पर बाजार कर की वसूली करते रहे तथा बाद में व्यापारियों एवं सेंगरों के बीच कर वसूली को लेकर समझौता हुआ।

रेवती – यह स्थान $25^{0}41'$ उत्तरी अक्षांश एवं $82^{0}24'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय से 35 किमी0 एवं तहसील मुख्यालय से 13 किमी की दूरी पर अवस्थित है। इसका क्षेत्रफल 0.12 वर्ग किमी तथा यहाँ की जनसंख्या 22082 है।

सिकन्दरपुर – यह स्थान जनपद का सबसे प्राचीन कस्बा हैं। जिसका नामकरण सिकन्दर लोदी के नाम पर पड़ा हैं। सिकन्दर लोदी ने ही इस भाग से दिल्ली सल्तनत की पुर्नस्थापना की थी और जौनपुर के शर्की शासकों को खदेड़ा था। इस नगर का महत्व मुगल काल तक बना रहा। यह 26^{0} उत्तरी अक्षांश एवं $84^{0}5'$ पूर्वी देशान्तर पर जनपद मुख्यालय से 34 किमी दूर अवस्थित है। यह सिकन्दरपुर नगर जिला मुख्यालय से पक्की सड़क जो बलिया से सोनौली राजमार्ग को जाती है, पर बसा हुआ है। यहाँ से रसड़ा, मनियर तथा नगरा को भी पक्की सड़क जाती हैं। यह नगर विकासखण्ड नवानगर के अर्न्तगत है।

गाजीपुर जनपद के नगरीय केन्द्रो का भू–ऐतिहासिकतत्व[18]:– वैदिक युग में गाजीपुर घने वनों से घिरा हुआ था उस समय यह स्थान ऋषियों के आश्रमो से सम्बन्धितं था। महर्षि परशुराम के पिता **महर्षियमदग्नि** रामायण काल में इसी स्थान पर रहते थे। प्राचीन काल में श्रृषि गौतम और च्यवन ने

इसी स्थान पर अपना उपदेश दिया था। भगवान बुद्ध ने भी सारनाथ वाराणसी में अपना प्रथम धर्मोपदेश दिया था जो गाजीपुर के पास ही है। **गाजीपुर** जिले के **औड़िहार** का क्षेत्र भगवान बुद्ध के उपदेशों का प्रमुख क्षेत्र था। **चीनी यात्री ह्वेनसेंग** इस क्षेत्र में आया था और उसने इस क्षेत्र को चांगचु कहा था जिसका अर्थ है युद्ध भूमि।

गाजीपुर – गाजीपुर नगर जो 25^{0}35′ उत्तरी अक्षांष एवं 83^{0}35′ पूर्वी देषान्तर पर वाराणसी से 72 किमी0 उत्तर–पूर्व समुद्र तल से 12 मीटर की ऊँचाई पर गंगा नदी के किनारे वाराणसी–छपरा रेलवे स्टेषन लाइन पर अवस्थित हैं। जो जनपद का मुख्यालय भी है। यह नगर बलिया,वाराणसी,आजमगढ़,लखनऊ से सड़क एवं रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। यहाँ के ऐतिहासिक अवषेशों से इस बात की पुश्टि होती है कि प्राचीन काल से ही यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नगरीय केन्द्र रहा है।

गाजीपुर का इतिहास 1330 ई0 से इसकी परम्परागत स्थापनाकार सैयद मसूद से षुरू होता हैं,जैसा कि पूर्व मे वर्णित हैं। एक कहावत के अनुसार इसका प्राचीन नाम गाँधीपुर था। जो एक राजा गिद्धी गजया गाथ के नाम पर है और उसी के नाम पर इस स्थान का नाम गाजीपुर पड़ा हैं। जहाँ पर वर्तमान समय मे गाजीपुर कस्बा अवस्थित हैं। उसके

आस–पास की नदी तट की खुदाई के परीक्षण से यह प्रकट होता हैं कि पुरानी ईटों की बहुत सी तह (स्तर) मौजूद हैं तथा खुदाई में पुराने बर्तनों के अवषेश भी यहाँ प्राप्त होते हैं। कनिंघम का सुझाव था कि इसका नाम गुर्जरपतिपुर था जो चीनी भाशा का षब्द चान जू हैं। जिसका अर्थ 'युद्धों के स्वामी का साम्राज्य' होता हैं,का संस्कृत समानार्थी है। यहाँ पर ढूह पाया जाता है। यहाँ मिट्टी के किले को ढूह कहा जाता हैं।

eksgEenkckn & मोहम्मदाबाद नगर $26^0$37' उत्तरी अक्षांष तथा $83^0$45' पूर्वी देषान्तर पर जिला मुख्यालय से 21 किमी0 दूर कोरण्टाडीह से बलिया जाने वाली मुख्य सड़क पर स्थित हैं। यह सड़क 3 किमी0 के बाद दो षाखाओं मे बट जाती है। पहली बलिया को तथा दूसरी यूसुफपुर से कासिमाबाद चली जाती है।

मोहम्मदाबाद के उत्पत्ति की कोई स्थाई ऐतिहासिक जानकारी नही मिलता है। परन्तु साक्ष्य के रूप मे लोदी सुल्तानों के समय से ही मुस्लिम लोगों का बसाव मिलता है। अकबर के समय मे यहाँ परगना की राजधानी थी,तत्कालिक समय मे मोहम्मदाबाद को परीचरबारी के नाम व्यक्त किया जाता था। परीचरबारी षब्द फलहारीवादी का अपभ्रन्स है।

जो एक सन्त के नाम पर है। जिनके बारे मे कहा जाता था कि वे केवल फल खाकर ही रहते थे।

सैदपुर – सैदपुर नगर 25^{0}32′ उत्तरी अक्षांष एवं 83^{0}14′ पूर्वी देषान्तर पर स्थित हैं। सैदपुर की प्राचीनता महान है। यह कहा जाता है कि पूर्व में इसका नाम चेन चू था। (जिसका वर्णन हेवेनसांग अपनी यात्रा के समय किया हैं) इस षब्द का अर्थ होता है युद्धो का विजेता का साम्राज्य′ जो कि युद्धपतिपुर के नाम से जाना जाता था। यह गंगा के उत्तरी किनारे पर गाजीपुर से 39 किमी दूर पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ हैं। गंगा का किनारा कांकर बनाता है जिससे यह व्यापक कटान से मुक्त रहा हैं। सैदपुर से एक सड़क उत्तर की तरफ मुख्य बाजार से होते हुए रेलवे स्टेषन की तरफ जाती है,दूसरी षाखा सादात भीतरी व सैदाबाद को जाती हैं। एक सड़क पष्चिम की ओर जाती है जो भीमापार तथा बाहरियबाद को जाती हैं। जो आगे तरफ चिरइयाकोट चली जाती है।

बहादुरगंज – यह नगर 25^{0}52′ उत्तरी अक्षांष एवं 83^{0}39′ पूर्वी देषान्तर पर सरयू के किनारे अवस्थित है। यह गाजीपुर से 35 किमी एवं तहसील मुख्यालय से 32 किमी की दूरी पर अवस्थित हैं। जो प्रषासनिक

रूप से टाउन एरिया हैं। ऐसा कहा जाता है कि इसकी स्थापना षेख अब्दुल्ला द्वारा 1742 में की गई जो तत्कालिक समय में गाजीपुर का उपषासक था। उसने यहाँ पर एक विषाल किला बनवाया। बहादुरगंज 1856 के एक्ट के तहत 1873 ई0 से प्रषासित हैं। बहादुरगंज अनाज,चीनी तथा साल्टपेपर का व्यापारिक केन्द्र था जो यहाँ से निर्यात होने वाले मुख्य पदार्थ थे तथा चावल,नमक,धातुएँ एवं मसालों का यहाँ आयात होता था। नौका परिवहन हेतु सुगम्य नदी के कारण अत्यधिक वस्तुओं का व्यापार नदी मार्ग द्वारा ही होता था। परन्तु समय के साथ–साथ रेल एवं सड़क यातायात विकसित हो जाने के कारण नदी का व्यापारिक महत्व कम हो गया। बहादुरगंज नगर में प्रतिदिन बाजार लगता हैं। राम नवमी के अवसर पर यहाँ पर एक छोटा सा मेला लगता है और कस्बे के पष्चिमी छोर पर एक मस्जिद तथा ईदगाह भी हैं, जिसका पुरातात्विक महत्व हैं। नगर में एक पोस्ट आफीस,2 प्राथमिक विद्यालय,एक जूनियर हाई स्कूल,एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र,मातृत्व उप केन्द्र तथा यूनियन बैंक की षाखा भी है। यहाँ की कुल आबादी 16215 तथा यह 153 हेक्टेयर के क्षेत्रफल पर फैला हुआ हैं।

आजमगढ़ जनपद के नगरीय केन्द्रो का भू ऐतिहासिकतत्व[19]:–

आजमगढ़ की स्थापना 1665 ई0 में विक्रमजीत आजम के द्वारा हुई थीं। विक्रमजीत निजामाबाद परगना में मेहनगर के गौतम राजपुतों के वंशज है। जिन्होंने अपने अन्य पूर्वजों की तरह इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उनकी मुसलमान पत्नी थीं। जिससे उनके दो बेटे आजम व अजमत उत्पन्न हुए। आजम ने अपने नाम से आजमगढ़ नगर का नामकरण किया जबकि अजमत ने सगड़ी परगना में अजमतगढ़ के बाजार की स्थापना की और एक किले का निर्माण कराया।

आजमगढ़ जनपद पूर्वी उ0 प्र0 का एक भाग है जो प्राचीन काल में कौशल राज्य का एक हिस्सा था। इसका उत्तर–पूर्व हिस्सा **माला राज्य** का भाग था। **बुद्ध** के समय में उत्तर भारत में चार सबसे शक्तिशाली राजतन्त्रों में एक कौशल भी था। कौशल साम्राज्य पूरब में गंगा और मगध साम्राज्य से घिरा हुआ था और उत्तर–पूर्व में **ब्रजी–लिक्ष्वी** की सीमाओं से और उत्तर में **शाक्य** की सीमाओं से, पश्चिम में **शूरसेना** से और दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम में **वत्स** राज्य, जिसकी राजधानी **कौशाम्बी** थी, से घिरा हुआ था। आजमगढ़ जनपद का कोई पुरातत्व सम्बन्धी महत्व नहीं है। यद्यपि कुछ किले, तालाब, तथा निरजन स्थानों पर कुछ ऐतिहासिक अवशेष दिखाई देते है। लेकिन उनके कोई पुरातात्विक महत्व नहीं है।

देश के महान् विभूति पं. राहुल सांस्कृत्यायन (जो इसी जनपद के रहने वाले थे) के नाम पर चौक से दक्षिण की ओर बड़ादेव क्षेत्र में महिला अस्पताल तथा 'सदर अस्पताल' हर्रा की चुँगी क्षेत्र में है जो जनपद निवासियों को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करता हैं।

यह नगर टौंस नदी (तमसा नदी) से तीन ओर से घिरा हुआ है। वर्षा ऋतु में टौंस नदी के बाढ़ से नगर को बचाने के लिए नगर के तीनों ओर बाँध बनाया गया है जो इस नगर को प्रतिवर्ष बाढ़ से प्रभावित होने से बचाता है।

अजमतगढ़ – आजमगढ़ से दोहरीघाट रोड पर स्थित अजमतगढ़ नगर सगड़ी तहसील मुख्यालय से 2.5 कि.मी. और जिला मुख्यालय से23 कि.मी. की दूरी पर $27^{0}9'$ उत्तरी अक्षांश एवं $83^{0}10'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। यह नगर महाराजगंज,घोसी और दोहरीघाट से पक्की सड़को द्वारा जुड़ा हैं। भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से यह नगर जनपद के कुल क्षेत्रफल का 0.07 प्रतिशत भू–भाग पर स्थित है। जनपद के नगरीय क्षेत्रों के क्षेत्रफल के आधार पर अजमतगढ़,जनपद का सातवाँ बड़ा नगर हैं। यहां जनपद की 0.26 प्रतिशत एवं नगरीय क्षेत्र की 3.64 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। विक्रमजीत सिंह के पुत्र अजमत खाँ के नाम पर ही इस नगर का नाम

अजमतगढ़ पड़ा। अजमत ने यहाँ पर एक किला बनवाया जिसका खण्डहर आज भी देखा जा सकता है।

बिलरियागंज – यह नगर जिला मुख्यालय से 15 कि.मी. तथा तहसील मुख्यालय से 11 कि.मी. की दूरी पर $26^{0}7'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}12'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है जो आजमगढ़,रौनापार,महाराजगंज और जीयनपुर से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है। 1.49 वर्ग कि.मी. के क्षेत्रफल पर विस्तृत इस नगर की कुल आबादी 11888 हैं जिनमें 51.37 प्रतिशत पुरूष एवं 48.63 प्रतिशत महिलायें हैं।

इस नगर मे व्यापारिक,शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। यहाँ 4 सस्ते गल्ले की दुकानें एवं एक शीत गोदाम है। बिलरियागंज नगर बिलरियागंज विकास खण्ड का मुख्यालय भी है। यहाँ का निकटतम रेलवे स्टेशन आजमगढ़ है।

महाराजगंज – महाराजगंज, बिलरियागंज तथा जीयनपुर से पक्की सड़क द्वारा जुड़ा हुआ हैं। यह नगर जिला मुख्यालय से 24 कि.मी. दूरी पर $26^{0}15'$ उत्तरी अक्षांश तथा $83^{0}5'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। यहाँ पर आजमगढ़ के राजा का शासन था। इस लिए इसका नाम महाराजगंज पड़ा। यहाँ भैरो बाबा का प्रसिद्ध मन्दिर हैं जो दैत्री के नाम से प्रचलित है। इससे

सम्बन्धित किन्दवन्ती है कि इसी भैरो जी के स्थान पर प्रजापति दक्ष ने यज्ञ किया था जिसमें सती भस्म हुई थी। प्राचीन मान्यता के अनुसार यह अयोध्या का एक प्राचीन नगर था जो अयोध्या से 40 कोस अथवा 120 कि.मी. की दूरी पर हैं। इस नगर मे प्रतिमाह पूर्णिमा के दिन मेला लगता है।

मुबाकरपुर – मुबारक–ए–शफी द्वारा स्थापित यह नगर जनपद मुख्यालय के उत्तर–पूर्व मे 12.8 कि.मी. दूरी पर $26^0$6′ उत्तरी अक्षांश तथा $83^0$18′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित हैं। यहाँ से आजमगढ़, मुहम्दाबाद तथा सठियाँव के लिए पक्की सड़क जाती हैं।

निजामाबाद – आयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की जन्मभूमि निजामाबाद, तहसील और जनपद मुख्यालय से 17 किमी0 की दूरी पर $26^0$3′ उत्तरी अक्षांश तथा $83^0$1′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह एक बहुत प्राचीन नगर है जहाँ हिन्दू तथा मुस्लिम राजा शासन करते रहे है। स्थानीय मान्यता के अनुसार एक सूफी सन्त निजामउद्दीन के नाम पर इस स्थान का नाम निजामाबाद पड़ा। यहाँ पर एक सूफी सन्त की समाधि भी है। मुस्लिम मान्यता के अनुसार निजामाबाद में सूफी सन्त सैयद असरफ जहाँगीर घूमते हुए यहाँ आये थे। सन् 1265 ई0 में सम्राट अकबर अपने विरोधी अली–कुली खाँ से युद्ध करके वापस जाते समय यहीं पर शिविर लगाकर अपना जन्मदिन

मनाया था। इन कारणों से इस स्थान को और ख्याति मिल गई तथा यहाँ आकर लोग बसने लगे।

इस नगर का विनाश लगभग 1763 से शुरू हो गया। जब नवाब वजीर ने आजमगढ़ के राजा जहान खाँ को मरवा दिया तथा उनके सैनिकों ने इस नगर की सम्पत्ति को लूट लिया। इस शताब्दी के पहले दशक से ही यहाँ हथकरघा उद्योग,चीनी उद्योग तथा बर्तन उद्योग विकसित होने लगा।

मिट्टी के बर्तन निर्माण में यह नगर विश्व प्रसिद्ध हैं यहाँ के बने हुए मिट्टी के काले बर्तन देश–विदेश के आफिस,होटलों एवं घरों की शोभा बढ़ाते है। यहाँ के बर्तनों की कीमत 100 रूपये से लेकर 5000 रूपये तक है। यह जनपद का एक प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र है। देश–विदेश के कला–प्रेमी,पर्यटक एवं शोधकर्ताओं के लिए प्रमुख केन्द्र हैं। यहाँ का एक प्रसिद्ध गुरूद्वारा भी है जहाँ गुरूनानक देव भी आये थे। प्रति वर्ष पंजाब तथा देश के अन्य भागों के लोग यहाँ पर आते है। जनसंख्या की दृष्टि से इस नगर में जनपद की 0.26 प्रतिशत तथा नगरीय क्षेत्र की 3.67 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती हैं।

फूलपुर – कुँवर नदी के तट पर स्थित फूलपुर नगर,आजमगढ़ से 37 किमी0 पश्चिम में लखनऊ–बलिया राजमार्ग एवं मऊ–शाहगंज रेलवे मार्ग पर

$26^{0}4'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^{0}53'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। फूलपुर एवं ऊदपुर अधिवास के रूप में मूलतः फूलपुर के नाम से जाना जाता है। फूलपुर में खोरासन रोड रेलवे स्टेशन है जो उत्तरी–पूर्वी रेलवे जोन के अर्न्तगत आता है। यह क्षेत्र अच्छी किस्म के गन्ना उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है जिससे मीठी और दानेदार चीनी उत्पादित की जाती है। यहाँ बाजार की स्थापना माहुल के राजा द्वारा लगभग 1733 ई0 में की गयी। यहाँ प्रति मंगलवार और शनिवार को बाजार लगती है।

लालगंज – इस नगर के उद्भव एवं विकास में ऐतिहासिक कारक सर्वप्रमुख हैं। मुस्लिम शासन काल में लाल बलूच खाँ नामक शासक ने यहाँ रात्रि विश्राम किया था। उसी के यादगार में वर्तमान नगर के उत्तरी ओर एक महल एवं तालाब बनाया गया जिसका भग्नावशेष आज भी है। इसी किले के चारों ओर अधिवास स्थापित किये गये जो वर्तमान लालगंज के रूप मे जाना जाता है। इस नगर मे मुस्लिम अधिवास सर्वप्रथम विकसित हुआ परिणामस्वरूप यहाँ मस्जिद, ईदगाह, ताजिया है।

मेंहनगर – जनपद में मेंहनगर का एक प्रमुख स्थान है। मेंहनगर के राजवंशावली ने वर्तमान आजमगढ़ का एक नाम दिया है। अपनी गौरवमयी इतिहास से शुसोभित मेंहनगर जनपद के दक्षिणांचल में स्थित एक प्रमुख

नगरीय केन्द्र है। यहाँ की गौरव गाथा नगर के दक्षिणी–पश्चिमी क्षेत्र में स्थित मेंहनगर के किला एवं हरिबाँध से स्पष्ट होता है।

सरायमीर – आजमगढ़–शाहगंज मार्ग पर आजमगढ़ तहसील एवं जनपद मुख्यालय से लगभग 30 किमी0 की दूरी पर स्थित है। वर्तमान सरायमीर नगर मुस्लिम शासन काल 15वीं सदी मे मीर कासिम की सराय थी। जिसका पुराना नाम खरीवान था जो बाद मे 'मीर कासिम की सराय' के नाम से प्रचलित हुआ तथा धीरे–धीरे उसका नाम सरायमीर के नाम से प्रचलित हो गया।

नगर मे पूर्वोत्तर रेलवे के अन्तर्गत सरायमीर रेलवे स्टेशन है। यह नगर मुस्लिम बहुल है। यहाँ लगभग 80 से 85 प्रतिषत मुस्लिम रहते हैं। इस नगर की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ के लगभग सभी परिवार के एक या दो सदस्य अरब देशों में अस्थायी रूप से रोजी–रोटी के लिए रहते हैं। यदि इस नगर को 'मिनी सऊदी अरब' कहा जाये तो अतियश्योक्ति नहीं होगी।

जीयनपुर – जनपद के उत्तरी भाग में आजमगढ़–गोरखपुर, आजमगढ़–बलिया मार्ग पर स्थित लगभग चतुर्भुज के आकार का है। यह नगर छोटी सरजू एवं घाघरा नदी के प्रवाह क्षेत्र में स्थित है। अतः यहाँ की मिट्टी कृषि कार्य के लिए उपयुक्त है। अतः इस नगर के आस–पास

कृषिगत उत्पादन में गेहूँ,धान के अतिरिक्त सब्जियों का उत्पादन होता है। नगर के चतुर्दिक सड़क जाल सुलभ होने के कारण कृषि पर आधारित उद्योग के लिए सर्वथा उपयुक्त नगर है। यहाँ किराना,कपड़ा,आभूषण आदि के प्रतिष्ठान स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवश्यकता के अनुरूप है।

केराकत (जौनपुर)नगरीय केन्द्र का भू– ऐतिहासिक तत्व[20]:– मुगल बादशाह शाहजहॉ के द्वारा **शिराज–ए–हिन्द** के खिताब से नवाजा गया जौनपुर जनपद जहॉ एक ओर शिक्षा के क्षेत्र में मध्यकालीन भारत के इतिहास में अपनी महत्ता स्थापित करता है वही अपनी ऐतिहासिक इमारतो जैसे **शाही किला, अटाला मस्जिद, झंझरी मस्जिद एवं शाहीपुल** के तमाम ऐतिहासिक धरोहरों को सजोए हुए है।

प्राचीनकाल में **महर्षि यमदग्नि** (परशुराम के पिता) की तपोस्थली एवं कालान्तर बुद्ध काल के क्रिया कलापों में महत्वपूर्ण स्थान मच्छिका सण्ड; **मछलीशहर एवं कीटगिरि; केराकतद्ध** को अपने में समेटे जौनपुर शहर का नाम **जौनपुर, अपने संस्थापक जूना शाह के नाम पर सन् 1360 में रखा गया।**

17वीं शताब्दी एवं 18 वीं शताब्दी में सूती वस्त्र एवं इत्र उघोग के लिए प्रसिद्ध जौनपुर 15वीं शताब्दी में जहॉ महादेवी आंदोलन में सक्रिय भूमिका का

निर्वाह करता था वही उसके अंतिम शर्की शासक हुसैन शाह शर्की का नाम **संगीत रागो हुसैनी, कन्हारा** एवं **टोडी** की उत्पत्ति के साथ जोड़ा जाता है। किमदवन्ती कि प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में रोटी और कमल रूपी प्रतीक की योजना जौनपुर के **मौलाना करामत अली** की ही थी।

उत्पत्ति एवं विकास (केराकत) :– बौद्ध धर्म के आधिपत्य काल में **कीटागिरि** कभी **कोराकोट**, जिसका अर्थ किला बताया जाता है, देवता सूचक शब्द केरार से जाना जाने वाला वर्तमान में केराकत के नाम से विख्यात है। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि केराकत को **शर्की बादशाहों** की रानियों में से चमना बीबी ने बसाया था जिनकी मजार वर्तमान तहसील मुख्यालय के पश्चिमोत्तर राजस्व कर संग्रह कार्यालय के पीछे विद्यमान है। इस मजार से सटी मस्जिद को लोग बादशाही मस्जिद के नाम से सम्बोधित करते है। ग्राम नरहन में तत्कालीन गद्दी नाम से विख्यात स्थान आज **शाह इस्माइल** की कुटी के नाम से बहुचर्चित है। इसी तहसील के जलालपुर के पास रेलवे तथा सड़क यातायात के लिए पुल बनाया गया है जो जनपद मुख्यालय से 16 किलोमीटर पर वाराणसी मार्ग पर स्थित है। इतिहासकार इस पुल की निर्माण शर्की साम्राज्य के सिकन्दर लोदी के पुत्र तत्कालीन प्रशासक जलाल खां लोदी द्वारा कराया बताते है। उसने जलालगंज बाजार को भी बसाया। इस पुल के निर्माण की तिथि 1510 ई0 अंकित है। इसी तहसील के एक अन्य

ऐतिहासिक कस्बा चन्दवक को बसाने के लिए **चॉद खां पुत्र इफतेखार खां** को माना जाता है। इन्ही के परिवार के अन्तिम व्यक्ति की मजार चन्दवक बाजार के दक्षिण–पूर्व में विद्यमान है। **चन्दवक रघुवंशी राजपूतों** का गढ़ रहा है। इस परिवार के संस्थापक गणेशराय थे। उनके बड़े लड़के रामदेव ने एक किला बनवाया था, **हरिहर देव** उनके छोटे लड़के थे। उन्होंने हरिहरपुर में एक बड़े किले का निर्माण कराया । डोभी क्षेत्र में ही गोमती नदी के किनारे महान **सन्त कीना राम** की तपोस्थली भी है।

वाराणसी नगरीय केन्द्र का भू ऐतिहासिक तत्व[22] :– वाराणसी गंगा नदी के किनारे बसा हुआ अति प्राचीन नगरीय केन्द्र है। वाराणसी जिसे काशी भी कहा जाता है। विश्व के प्राचीनतम शहरों में से एक है। वामन पुराण के अनुसार वरूणा और अस्सी नदिया सभ्यता के प्रथम पुरूष के शरीर से निकली। इन दोनों नदियों के बीच के स्थान को वाराणसी कहा जाता है।[23]

काशी शब्द कश से बना है जिसका अर्थ होता है **'चमकना'**। काशी वह मौलिक स्थान कहा जाता हैं जिसे शिव और पार्वती ने सृष्टि प्रारम्भ होने के समय बनायी थी। वाराणसी के घाट, मन्दिर एवं इनमें होने वाली पूजा एक अनोखा अनुभव कराती हैं। वाराणसी का जिक्र **ऋगवेद, स्कन्द पुराण, रामायण और महाभारत** में भी मिलता हैं। ऐसा माना जाता हैं कि यह शहर

तीन हजार से पांच हजार वर्ष पुराना हैं। नदियों के पास यहा पर अभी भी **पंचकोषीय** यात्रा की जाती हैं जिसका अंत **साक्षी विनायक मन्दिर** में होता हैं इसलिए यह यात्रा गंगा, वरूणा, और अस्सी नदी के मिलन और इसके बीच में बसने वाले अधिवास को सिद्ध करती हैं। आज अस्सी नदी एक नाले के रूप में प्रवाहित होती हैं। वाराणसी में करीब 100 घाट हैं। जिसमें **दशाश्वमेघ घाट** सबसे प्रसिद्ध हैं जहां पर कहा जाता हैं कि भगवान ब्रम्हा ने यज्ञ में दस घोड़ों को बलि दिया था। यहीं वाराणसी नगरी में भगवान **शिव के बारह पवित्र ज्योर्तिलिंगों** में से एक स्थापित है। जहां पवित्र **काशी विश्वनाथ** का मन्दिर हैं यही पर शंकराचार्य ने हिन्दू धर्म पर अपनी टिप्पणी लिखी थी। इसके अतिरिक्त **संकट मोचन मन्दिर** भी यहीं हैं। जहां पर भगवान हनुमान की पूजा होती हैं।

वाराणसी नगर शिक्षा, हस्तकला, शिल्पकला, चित्रकला, तथा संगीत की सम्वृद्ध परम्पराओं वाला शहर हैं। इन क्षेत्रों के विश्वविख्यात व्यक्तियों को जन्म दिया। यही पर कबीर, रविदास, मुंशी प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द शुक्ल, पं0 रविशंकर, पं0 हरि प्रसाद चौरसिया, उस्ताद विस्मिला खॉ, इत्यादि लोगों का जन्म हुआ। शिल्पकला का वाराणसी नगर प्रमुख केन्द्र रहा हैं। **वाराणसी सिल्क साड़ियॉ** विश्व में प्रसिद्ध है। साथ–साथ **कालीन उद्योग बनारसी पान, बनारसी खोवा** इत्यादि यहां के प्रमुख उत्पाद है। यही पर **डीजल लोकोमेटिव**

कारखाना, काशी हिन्दू विश्वविद्याल, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्याल एवं काशी विद्यापीठ वर्तमान समय में उन्नति शिक्षा के केन्द्र है।[24]

निष्कर्ष

वाराणसी से छः किमी0 दूर बौध मठ एवं मन्दिरों के लिए **सारनाथ** नामक स्थान विश्व प्रसिद्ध है। बोध गया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद भगवान बुद्ध अपने पॉच शिष्यों को पहला उपदेश सारनाथ में ही दिये थे। सारनाथ जैनों के लिए भी पवित्र स्थान है। जैनियों के ग्यारहवे तीर्थकर श्री शेषनाथ की मृत्यु सारनाथ में हुई थी। सारनाथ में ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा स्थापित संग्रहालय भी है।

नगरीय केन्द्रों के भू–ऐतिहासिक तत्व अपने प्रदेश में उद्यमों तथा उद्यमशीलता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सर्वप्रथम, उद्यम के प्रति स्थानीय लोगों का दृष्टिकोंण क्या है तथा उनमें वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति होती है अथवा नहीं इसका आकलन भी नगरीय भूगोल के अध्ययन में आवश्यक है। निचला गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र ऐतिहासिक भी है तथा उद्यम के पर्याप्त स्रोत तथा अवसर भी इस क्षेत्र में उपलब्ध हैं। अगले अध्याय में इस परिप्रेक्ष्य से विश्लेषण किया गया है।

संन्दर्भ सूची

1. Aziz, A. Summer 1955. "A Study of Indian Towns". *Geographer* 7
2. Bose, A. 1973. *Studies in India's Urbanization 1901-1971*. Bombay & New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Co.
3. सिंह, ओम प्रकाश, ''केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास'', उ0 मा0 भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, अंक 9, सं0 1 पृ0 31–32.
4. वहीं,
5. F. Cherunilam. 1999. *Urbanisation in Developing Countries: Economic & Demographic Analysis*, New Delhi : D.K. Publications.
6. Fox, Richard. ed. 1969. *Urban India: Society, Space and Image*. Duke University: Program in Comparative Studies on Southern Asia.
7. सिंह, ओम प्रकाश, ''केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास'', उ0 मा0 भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, अंक 9, सं0 1 पृ0 31–32.
8. सिंह, ओम प्रकाश, केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास, उ0 मा0 भू0 पत्रिका, गोरखपुर, अंक 9, सं0 1, पृ0 106–107.
9. वही, पृ0 106.
10. Garnier, J.B. and G. Cbabat, Urban Geography, p. 105.
11. सिंह, ओम प्रकाश, ''केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास'', उ0 मा0 भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, अंक 9, सं0 1 पृ0 106.

12. http://Mau.nic.in

13. सिंह, ओम प्रकाश, ''केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास'', उ0 मा0 भूगोल पत्रिका, गोरखपुर, अंक 9, सं0 1 पृ0 127.

14. Uttar Pradesh Census of India 2001. Series 10, Vol 1. Directorat of Census Operations, Uttar Pradesh.

15. http://ballia.nic.in, 126.

16. सिंह, रामबली एवं काशी नाथ सिंह, 1984, ''बलिया जनपद में राजपूत वंशीय अधिकवासों का ऐतिहासिक उद्भव,'' उत्तर भारत भूगोल पत्रिका गोरखपुर, अंक–20, संख्या–02, पृष्ठ 79–80

17. सिंह, शिवबहादुर, 1983, ''बलिया जनपद के केन्द्र स्थल तंत्र'', पी0एच0–डी0 शोध प्रबन्ध, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

18. http://Gazipur.nic.in, 25.

19. http://Azamgarh.nic.in, 20.

20. http://Jaunpur.nic.in, 29.

21. Uttar Pradesh Census of India 2001. Series 10, Vol 1. Directorat of Census Operations, Uttar Pradesh.

22. http://varanasi.nic.in, 27

23. Greaves, Edwin. 1909. *Kashi the City Illustrious or Benares*. Allahabad: The Indian Press;

24. Havell, E. B. 1905.*Benares, the Sacred City: Sketches of Hindu Life*

and Religion. London: Blackie & Son; Altekar, A. S. 1947. *Benares and Sarnath: Past and Present*. 2nd ed. Varanasi: Banaras Hindu University; Anon. [Sherring, M. A.] 1864. *Benares Past and Present*. Calcutta Review 80.